श्रीरामानन्दवेदान्तग्रन्थमालायाः सप्तमं पुष्पम् ।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

पण्डितराज स्वामिश्रीहरिकृष्णाचार्यविरचित
तत्त्वत्रयदर्पणव्याख्यालंकृत

आदिकविमहर्षिश्रीवाल्मीकिप्रोक्तः

तत्त्वत्रयबोधः

डाकोरस्थश्रीटीलाद्वारपीठाधिपति जगद्गुरु
श्रीमङ्गलदासमहामुनीन्द्र प्रशिष्य श्रीमहान्त
श्रीरामजीदासमहामण्डलेश्वरविरचितश्च

तत्त्वालोकः

प्रकाशकः- स्वामीश्रीवैष्णवाचार्य गुरु श्रीमान् महान्त
श्रीरामप्रतापदासजी महाराज वैष्णवभूषण

त्रणदेवडी-राममन्दिर,
शारङ्गपुर दर्वाजा बाहर-अहमदाबाद नं. २

प्रति	श्री रामनवमी स. २०१० वि.	मूल्य
१०००	सन् ११-४-१९५४ ई.	चार आना

मुद्रक : पुरुषोत्तमदास शंकरदास पटेल
मुद्रणस्थानः श्री उत्कृष्ट मुद्रणालय, गांधीरोड, अहमदाबाद.

Scanned by CamScanner

* भूमिका *

आदरणीय वेदान्तप्रेमी बन्धुओ !

निखिलब्रह्माण्डनायक कल्याणगुणगणार्णव परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीजानकीनाथजीकी अनुपम अनुकम्पासे यह तत्त्वत्रयबोधनामक ग्रन्थ-रत्न प्रकाशित हो रहा है। यह ग्रन्थ परमआर्ष सर्वोत्कृष्ट विशिष्टाद्वैत-सिद्धान्तानुकूल वेदान्ततत्त्वका प्रकाशक तथा 'श्रीरामानन्दवेदान्त' में प्रवेश करनेवाले जिज्ञासुओंका अद्वितीय सहायक है। यह निबन्ध नारदपञ्चरात्रान्तर्गत श्रीवाल्मीकिसंहितास्थ आदिकवि महर्षिश्रीवाल्मीकिजी तथा ऋषियोंका संवादरूप है।

श्री १९०८ जगद्गुरु श्रीमङ्गलदासजी महामुनीन्द्र द्वारा स्थापित डाकोरतीर्थस्थ श्री टीलाद्वारागादीके वर्त्तमानकालीन सभापण्डित पण्डित-राज स्वामीश्री हरिकृष्णाचार्यजीने लोकोपकारार्थ उक्त तत्त्वत्रयबोधकी तत्व-त्रयदर्पणनामक हिन्दी टीका करके महान उपकार किया है। इन श्री पण्डितजी महाराजने अनेकों वैष्णवों को संस्कृत पढ़ाकर श्रीरामानन्द सम्प्रदायकी उत्तम सेवाकी है। तथैव श्रीगलतापीठोद्धारादि द्वारा सम्प्र-दायके एकमात्र सफलताप्राप्त कलहरहित 'सन्त'पत्रके प्रकाशक और सम्पादक जयपुरके लडीवाले श्रीमान् शेठ श्रीवंशीधरजी तथा श्रीमान् शेठ श्रीमनोहरलालजीने सन्त पत्रके श्रीरामानन्दांकमें उक्त दोनों निबन्धों को प्रकाशित किया है। तदर्थ धन्यवाद।

त्रणदेवड़ी—श्रीराममन्दिर (अहमदावाद) के प्रतिष्ठापक तथा जगद्-गुरु श्रीमङ्गलदासजी महामुनीन्द्रके प्रशिष्य (नातीचेला) परमादरणीय श्रीमहान्त श्रीराम(जी) दासजी महराज महामण्डलेश्वर विरचित **तत्त्वालोक** भी संयुक्त कर दिया गया है। यह निबन्ध जगद्गुरु श्रीमङ्गलाचार्यजीरचित वेदान्तचिन्तामणिकी हिन्दी पद्यात्मक सुन्दर व्याख्या है। आशा करता हूँ कि वेदान्ततत्वजिज्ञासु महानुभाव इससे लाभ उठाकर मेरे प्रकाशनको सफल करेंगे। श्रीरामनवमी सं. २०१० वि.।

निवेदक—स्वामी श्रीवैष्णवाचार्य वेदान्ततीर्थ।

Scanned by CamScanner

जय श्री राम

श्रीमते रामानन्दाय नम ।

श्रीमते टीलाचार्याय नमः ।   श्रीमते मङ्गलाचार्याय नमः ।

आदिकविमहर्षिश्रीवाल्मीकिप्रोक्तः

तत्त्वत्रयबोधः

ऋषय उचुः—

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्ते तत्त्वत्रयमुदीरितम् ।
तच्छ्रोतुमभिवाञ्छामः कृपया ब्रूहि नः प्रभो ॥ १ ॥

(वाल्मीकिसंहिता अध्याय २ श्लो. ४३)

अथ सर्वशास्त्रनिष्णातपण्डितराजस्वामिश्रीहरिकृष्णाचार्यप्रणीतं

❀ तत्त्वत्रयदर्पणम् ❀

वन्दे रामं परं ब्रह्म कल्याणगुणवारिधिम् ।
सर्वज्ञं दिव्यदेहञ्च रामानानन्दं जगद्गुरुम् ॥ १ ॥
टीलाचार्यं व्रतीन्द्रं च मङ्गलार्यं मुनीश्वरम् ।
नत्वा गुरूंश्च कुर्वेऽहं तत्त्वबोधाय दर्पणम् ॥ २ ॥

ऋषियोंने कहा—हे प्रभो ! विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तमें तीन तत्त्व कहे गये हैं। हम उन्हें श्रवण करना चाहते हैं। आप कृपाकर कहें। इस प्रकारकी जिज्ञासा से विदित होता है कि ऋषियोंको विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त ही अभिमत है।

विशिष्टाद्वैत द्वैत अद्वैत द्वैताद्वैत शुद्धाद्वैत तथा अचिन्त्यभेदाभेद इत्यादि वेदान्तसिद्धान्तोंमें श्रीसम्प्रदायाचार्य आचार्यसार्वभौम

Scanned by CamScanner

आनन्दभाष्यकार श्री११०८ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज का सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत है। यह आचार्यपादने स्वयं ही लिखा है कि–

'एवञ्चाखिलश्रुतिस्मृतीतिहासपुराणसामञ्जस्यादुपपत्तिबलाच्च विशिष्टाद्वैतमेवास्य ब्रह्ममीमांसाशास्त्रस्य विषयो न तु केवलाद्वैतम्।' (आनन्दभाष्य १।१।१)

अर्थ—इस प्रकार सम्पूर्ण श्रुति स्मृति इतिहास तथा पुराण इत्यादिकोंके सामञ्जस्य (सङ्गति) होनेसे तथा उपपत्ति (युक्ति) के बलसे विशिष्टाद्वैत ही इस ब्रह्ममीमांसा शास्त्रका विषय है केवलाद्वैत नहीं।

भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजीने विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त माननेमें बोधायनवृत्तिकार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यनामक महर्षि बोधायन इत्यादि अपने पूर्वाचार्योंका तथा उक्त आर्षमतका ही अनुसरण किया है।

सभी श्रुति स्मृति तथा महर्षिवचनोंका पक्षपातरहित समन्वय इसी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तमें होता है इसलिये विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तका ही दूसरा नाम समन्वयसिद्धान्त भी है।

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तमें चित् अचित् और ईश्वर ये तीन तत्त्व माने गये हैं। इन्हीं तीनों तत्त्वों का वर्णन श्रीवाल्मीकिजीने उक्त प्रकारसे आरब्ध किया है। उक्त श्लोक नारदपञ्चरात्रकी संहिताओंमें परिगणित श्रीवाल्मीकिसंहिताके दूसरे अध्यायका ४२ तेतालीसवां श्लोक है। मैंने तत्त्वत्रयबोध निबन्धके क्रममें उसे प्रथम श्लोक लिखा है। यह ध्यानमें रखनेयोग्य है ॥१॥

वाल्मीकिरुवाच—

धन्या यूयं यतस्तत्त्वत्रयबोधस्य लिप्सवः ।
शृणुध्वं मुनयः सर्वे कथयामि समीहितम् ॥ २ ॥

महर्षि श्रीवाल्मीकिजीने कहा कि हे मुनियो आप लोग धन्य हैं। क्योंकि तत्त्वत्रयबोध (तत्त्वत्रयके ज्ञान)के चाहनेवाले हैं। हे मुनियो सुनो। आपलोगोंकी अभिलषित वस्तुको कहता हूं ॥२॥

मुमुक्षोश्चेतनस्यैव तस्य ज्ञानमपेक्षते ।
चिदचिदीश्वरश्चैतत्तत्त्वत्रयमितीरितम् ॥ ३ ॥

मुमुक्षु चेतनको उस (तत्त्वत्रय)का ज्ञान अपेक्षित ही है। चित् (जीव) अचित् (अचेतन) और ईश्वर (ब्रह्म=भगवान् श्रीरामजी) इन्हीं तीन तत्त्वोंके समुदायको तत्वत्रय कहा गया हैं ॥३॥

परीक्ष्य लोकानित्यादिश्रुत्युक्तेन क्रमेण च ।
मुमुक्षा जायते पूर्वं तत्त्वज्ञानाच्च सर्वदा ॥ ४ ॥

"परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायात्। नास्त्यकृतः कृतेन। तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ।" (मुण्डक)

अर्थ—कर्मद्वारा सम्पादित (प्राप्त किये हुए) स्वर्गादिलोकोंकी परीक्षा करके ब्राह्मणको वैराग्य प्राप्त करना चाहिये। किये हुए कर्मों (केवल्यागादिकों)से अकृत अर्थात् ब्रह्मप्राप्तिरूप मोक्षकी प्राप्ति नहीं हो सकती है। उस ब्रह्मतत्त्वको जाननेकेलिये समित्पाणि होकर अर्थात् हाथमें समिध् इत्यादि उपहारद्रव्य लेकर श्रोत्रिय तथा ब्रह्मनिष्ठ गुरुकी ही शरणमें जाना चाहिये।

Scanned by CamScanner

उक्त श्रुतिमें कथित क्रमके अनुसार सर्वदा तत्वज्ञानके पूर्वमें मुमुक्षा (मोक्षकी इच्छा) उत्पन्न होती है ॥४॥

अत्मा चित्पदसंग्राह्यो ज्ञानाश्रय इतीरणा ।
तस्य रूपमिदं ज्ञेयं वक्ष्यमाणमनुत्तमम् ॥ ५ ॥

चित् पदसे आत्मा का ग्रहण होता है । अर्थात् चित्का अर्थ है आत्मा । वह आत्मा ज्ञानाश्रय (ज्ञाता) कहा गया है । उस आत्माका सर्वोत्तम रूप अग्रिम कथनानुसार जानना चाहिये ॥५॥

देहेन्द्रियमनःप्राणबुद्धिभ्यश्च विलक्षणम् ।
अजडं नित्यमव्यक्तं निर्विकारमतीन्द्रियम् ॥ ६ ॥

आत्माका स्वरूप देह, इन्द्रिय, मन, प्राण और बुद्धि (धर्मभूतज्ञान)से विलक्षण है। अजड (स्वयंप्रकाश) नित्य (उत्पत्ति-विनाशशून्य) अव्यक्त (घटपटादि पदार्थोंके सजातीय रूपसे अग्राह्य) निर्विकार (विकारशून्य=सर्वदा एकरूपसे रहनेवाला) अतीन्द्रिय (शुद्ध चित्तके विना और किसीभी इन्द्रिय से न जाननेलायक) है ॥६॥

श्री११०८ श्रीसाकेतनिवासाचार्यनामक जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजी महाराजने भी प्रबोधकलानिधिमें कहा है कि—

" प्रज्ञाप्राणशरीरतः करणतो भिन्नाः समे प्राणिनः ॥८॥"

शिक्षासुधामें भी कहा है कि—

" देहेन्द्रियधीप्राणते जीवात्मा नित भिन्न ।"

नियाम्यं धार्यमीशस्य शेषं तस्य च शेषिणः ।
अणु चानन्दरूपश्च ज्ञेयं रूपं चिदात्मनः ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

चिदात्मा (जीवात्मा)का स्वरूप ईश अर्थात् भगवान् श्रीरामजी का नियाम्य धार्य तथा उन्ही शेषी भगवान् श्रीरामजीका शेष (चन्दन-कुसुम इत्यादिके समान सर्वथा उपयोगके योग्य) भी है। अणु और आनन्दरूप है ॥ ७ ॥

श्री१ १०८ जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजीने भी कहा है कि—

'टीला' धार्य नियाम्य अरु सीतावरको शेष। (शिक्षासुधा)

डाकोरस्थ श्रीटीलाद्वारपीठ (डाकोरकी श्रीटीलाचार्यगादी)के संस्थापक श्री१ १०८ जगद्गुरु श्रीमङ्गलदासजी महामुनीन्द्रने भी वेदान्त-चिन्तामणिमें कहा है कि—

"शेषस्तनू रघुपतेरणुचेतनोऽश-
श्चान्यो मतेर्हि करणाद्वपुषोऽप्यसुभ्यः।"

श्रीब्रह्माजीने भी कहा है कि—'जगत् सर्वं शरीरं ते'

अर्थ—हे भगवान् श्रीरामजी यह चेतनाचेतनात्मक समस्त जगत् आपका शरीर है। (वा०यु०)

अपृथक्सिद्धिसम्बन्धसे जो सर्वथा धार्य नियाम्य और शेष होता है वही चेतन का शरीर कहा जाता है।

दाहे तु पातकाभावान्न देहश्चात्मसंज्ञकः।
इन्द्रियाणामचैतन्यान्न तान्यपि स चेतनः ॥ ८ ॥

आत्माके नाशक (हत्यारे)को पातकी कहा गया है। परन्तु मरनेके पश्चात् शरीरके दाह करनेवालेको पातक नहीं लगता। इस लिये देह आत्मा नहीं है। इन्द्रियोंके चैतन्य (चेतनता) न होनेसे वे इन्द्रियां भी वह चेतन (जीव) नहीं हैं ॥८॥

Scanned by CamScanner

अनित्यत्वादनेकत्वात्तेषां नात्मत्वमीरितम् ।
यदि चक्षुर्भवेदात्मा नान्धो रूपं स्मरेत् क्वचित् ॥ ९ ॥

इन्द्रियोंके अनित्य होनेसे और अनेक होनेसे इन्द्रियोंका आत्मत्व नहीं कहा। अर्थात् अनित्य होनेसे और अनेक होनेके हेतुसे इन्द्रियोंको आत्मा नहीं कहा गया। क्योंकि आत्मा नित्य और एक होता है।

अब एक एक इन्द्रियोंके आत्मत्वका खण्डन करते हैं—यदि चक्षु इन्द्रियको आत्मा माना जाय तो अन्धा पुरुष कभी रूपका स्मरण न कर सकेगा। क्योंकि रूपका अनुभव करनेवाला चक्षुरूप आत्मा तो नष्ट हो चुका। यह नियम है कि जो-जिसका अनुभव करता है वही उसे स्मरण कर सकता है ॥९॥

श्रोत्रस्य यदि चात्मत्वं स्वीकृतं स्यान्महर्षयः! ।
शब्दस्मृतिः पुनश्चात्र बाध्या स्यात् सर्वथाऽनघाः ॥१०॥

हे पापरहित महर्षियो! यदि श्रोत्र इन्द्रियका आत्मत्व माना जायगा तो श्रोत्रके नष्ट होजाने पर बधिर (बहरे) पुरुषको शब्दानुभव करनेवाले श्रोत्ररूप आत्माके न होनेसे शब्दकी स्मृति बाध्य होगी अर्थात् न होगी ॥१०॥

स्थूलोऽहमिति संवादो गुणीभूतो हि निश्चितः ।
तस्माद् देहस्य चात्मत्वं न स्यात् सिद्धं कदापि तु ॥११॥

'स्थूलोऽहम्' मैं स्थूल हूं' यह प्रतीति गौण है मुख्य नहीं। इस लिये देहका आत्मत्व कभी नहीं सिद्ध हो सकता है ॥११॥

Scanned by CamScanner

अन्याधीनप्रकाशस्तु न स्याद् यश्च महर्षयः।
अजडं तं विजानीथ ह्येषा शास्त्रीयकल्पना ॥१२॥

हे महर्षियो ! जिस पदार्थका प्रकाश अन्यके अधीन न हो अर्थात् जो तत्त्व स्वयंप्रकाश हो उसे अजड जानो। यही शास्त्रीय मन्तव्य है ॥ १२ ॥

अजडश्चायमात्माऽस्ति स्वयं ज्योतिरितिश्रुतेः।
बद्धा मुक्ताश्च नित्याश्च त्रिधाऽऽत्मानः समीरिताः ॥१३॥

'यत्रायं पुरुषः स्वयं ज्योतिर्भवति' इत्यादि श्रुतिके प्रमाण से यह आत्मा अजड़ है। बद्ध मुक्त और नित्य भेदसे जीव तीन प्रकारके कहे गये हैं ॥१३॥

ब्रह्मादिकीटपर्यन्ता देवदानवमानवाः।
तिर्यञ्चः स्थावराश्चापि बद्धाः संसारिणो मताः ॥ १४॥

ब्रह्माजीसे लेकर कीटपर्यन्त देव दानव मनुष्य पशु पक्षी तथा स्थावर (वृक्षलतादि) संसारी जीव बद्ध माने गये हैं ॥१४॥

ते चापि द्विविधा एके शास्त्राधीनत्वमागताः।
परे चोच्छृङ्खला ज्ञेयाः शास्त्रधर्मपरिच्युताः ॥१५॥

वे बद्धजीव भी दो प्रकारके हैं। एक शास्त्राधीन दूसरे शास्त्रीय धर्मसे पतित उच्छृंखल ॥१५॥

शास्त्राधीनाश्च विज्ञेयास्तत्त्वस्य प्रबुभुत्सवः।
बुभुक्षुत्वमुमुक्षुत्वभेदेन द्विविधा हि ते ॥ १६ ॥

Scanned by CamScanner

तत्वके जिज्ञासु प्राणियोंको शास्त्राधीन जानना चाहिये। वे शास्त्राधीन दो प्रकारके हैं बुमुक्षु और मुमुक्षु ॥१६॥

बुमुक्षवो द्विविधाः प्रोक्ताः .... ।
अर्थकर्मपरा एके ततो धर्मपराः परे ॥ १७ ॥

बुमुक्षु जीव दो प्रकारके होते हैं। एक अर्थ-काम पर दूसरे धर्मपर ॥१७॥

ये च धर्मपरास्तेऽपि द्विविधाः सन्ति जन्मिनः।
देवान्तरेषु संलग्नाः श्रीरामचरणेषु च ॥ १८ ॥

जो धर्मपर हैं वे प्राणी भी दो प्रकारके हैं। एक देवतान्तररत दूसरे श्रीरामचरणरत ॥१८॥

मुमुक्षवो द्विविधा ज्ञेयाः कैवल्या मोक्षमार्गिणः।
शृणुध्वमृषयो वेदे मोक्षकामा द्विधा मताः ॥ १९ ॥
भक्ताश्चाथ प्रपन्नाश्च भक्ताश्चापि द्विधा मताः।
साध्यसाधनभेदेन भक्तेर्द्वैविध्यकारणात् ॥ २० ॥

कैवल्य और मोक्षपर (सायुज्यमुक्तिपरायण) भेदसे मुमुक्षु दो प्रकारके जानने चाहिये। हे ऋषियो सुनो वेद में मोक्ष चाहनेवाले दो प्रकारके माने गये हैं। भक्त और प्रपन्न। साध्य और साधन भेदसे भक्ति दो प्रकारकी है। इसलिये भक्त भी दो प्रकारके हैं। साध्यभक्तिनिष्ठ और साधनभक्तिनिष्ठ ॥२०॥

प्रपन्ना बहुधा ज्ञेया मोक्षेच्छुश्च त्रिवर्गवान्।
एकान्ती परमैकान्ती दृप्त आर्त्तश्च विश्रुताः ॥ २१ ॥

Scanned by CamScanner

प्रपन्न बहुत प्रकारके हैं। उनका क्रम इस प्रकार. है—प्रपन्न दो प्रकारके होते हैं। मुमुक्षु और धर्म अर्थ काम रूप त्रिवर्गपर। मुमुक्षु प्रपन्न भी दो प्रकारके होते हैं। एकान्ती और परमैकान्ती। परमैकान्ती दो प्रकारके होते हैं। दृप्त और आर्त्त ॥२१॥

भेदाश्च बहवः सन्ति बद्धानां तु महर्षयः ! ।
मुक्ता निवृत्तसंसारा उच्यन्ते वेदवेदिभिः ॥ २२ ॥

हे महर्षियो ! बद्धजीवोंके उक्त बहुत भेद हैं। जिन जीवोंकी संसारावस्था (जन्ममरणावस्था) निवृत्त हो जाती है उन्हें वेदवेत्ता लोग मुक्त कहते हैं ॥२२॥

सूर्यमण्डलमाभिद्य सूर्यलोकमवाप्य च ।
विरजां सम्प्रतीर्याथ वैकुण्ठं सम्प्रविश्य च ॥ २३ ॥

अब मुक्तों कि स्थिति स्पष्ट रूपसे कही जाती है। सूर्य मण्डलको भेदकर सूर्यलोकको प्राप्तहोकर तथा विरजा नदीको पार करके वैकुण्ठमें प्रविष्ट होकर ॥२३॥

तत्र हनुमदादींश्च साष्टाङ्गं प्राणिपत्य हि ।
श्रद्धया परया युक्ता आचार्यानितरांस्तथा ॥ २४ ॥

वहां श्रीहनुमान्‌जी आदि नित्यपार्षदोंको तथा अन्यान्य पूर्वाचार्योंको परमश्रद्धासे साष्टाङ्ग प्रणाम कर ॥२४॥

भगवन्तं रामचन्द्रं धनुर्बाणविभूषितम् ।
श्रियः श्रिया च जानक्या कमले च विराजितम् ॥२५॥
दिव्यासनसमासीनं दिव्यभूषणभूषितम् ।
ब्रुवाणा नाथनाथेति प्रणम्य जगदीश्वरम् ॥ २६ ॥

Scanned by CamScanner

स्वाङ्के श्रीरामचन्द्रेण करुणासागरेण च
स्थापिताश्च महाभागास्तेनैव च कटाक्षिताः ॥ २७ ॥
ब्रह्मानुभवकर्त्तारो मुक्ता उच्यन्त आस्तिकैः।
संसारमनवाप्तास्तु नित्या हनुमदादयः ॥ २८ ॥

धनुर्बाण तथा दिव्यभूषणोंसे विभूषित श्री की भी श्री श्रीजानकीजीके साथमें कमलके ऊपर दिव्यसिंहासन पर विराजित भगवान् श्रीरामचन्द्रजीको प्रणाम करके हे नाथ हे नाथ इस प्रकारसे दैन्य स्वरसे पुकारते हुए, और करुणासागर भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके द्वारा अपने अङ्क (गोद) में स्थापित किये हुए, उन्हीं भगवान् श्रीरामचन्द्रजीसे कृपाकटाक्षद्वारा देखे हुए ब्रह्मानुभव करनेवाले महानुभाव आस्तिकों द्वारा मुक्त जीव कहे जाते हैं। और जो कभी भी संसारावस्था अर्थात् जन्ममृत्युचक्रको नहीं प्राप्त होते हैं वे श्रीहनुमान्जी इत्यादि नित्य जीव हैं ॥२५-२८॥

ज्ञानेन यद्विहीनं तदचित्तत्त्वं निगद्यते।
शुद्धसत्त्वमिश्रसत्त्वसत्त्वशून्यविभेदतः ॥ २९ ॥
त्रिविधं तस्य भेदास्तु ज्ञेया सर्वे मनीषिभिः।

जो ज्ञानसे शून्य है वह अचित् तत्त्व कहा जाता है। वह शुद्धसत्व, मिश्रसत्व और सत्वशून्य भेद से तीन प्रकारका है। उसके सर्वभेद विद्वानोंसे जानलेना चाहिये। शुद्ध सत्वको ही त्रिपादविभूति परधाम अथवा मोक्षधाम कहते हैं। मिश्रसत्व प्रकृतिको कहते हैं। इसके चौवीस भेद हैं। मूलप्रकृति महत्तत्व

अहङ्कार मन श्रोत त्वक चक्षु रसना घ्राण वाक् वाणि पाद पायु (गुदा) और उपस्थ (लिङ्ग) इत्यादि एकादश इन्द्रियां शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध नामक पञ्च तन्मात्रा तथा आकाश वायु तेज जल और पृथिवी नामक पञ्च महाभूत । सत्वशून्यतत्व कालको कहते हैं । यह भूत वर्त्तमान और भविष्यद् भेद से तीन प्रकारका होता है । कालके एक होने पर भी उपाधिभेदसे निमिष कला आदि बहुत भेद हैं । इनका निरूपण श्रीटीलाचार्यजीकृत शिक्षासुधा इत्यादि ग्रन्थोंमें बहुत सुन्दर है ॥२९–३०॥

ईश्वरः सर्वभूतानामादिकारणमुच्यते ॥ ३० ॥
सर्वज्ञो ज्ञानशक्त्यादिकल्याणगुणभूषितः ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रदाता रघुनन्दनः ॥ ३१ ॥
दिव्यविग्रहसंयुक्तोऽनन्तानन्दो जगत्पतिः ।

ईश्वर (भगवान् श्रीरामजी) सर्वभूतोंके आदिकारण कहे जाते हैं । सर्वज्ञ तथा ज्ञान शक्ति इत्यादि कल्याण गुणोंसे अलङ्कृत हैं । धर्म अर्थ काम और मोक्षनामक चतुर्विध पुरुषार्थोंके देनेवाले अनन्त आनन्दको देनेवाले दिव्यदेहसे युक्त जगत्पति भगवान् श्रीरघुनन्दन ही सर्वेश्वर हैं ॥३१॥

यद्यप्यार्तिहरो रामो ह्यन्तर्यामी महाप्रभुः ॥ ३२ ॥
तथाप्यात्मकृतैः पापैर्न कदापि स बध्यते ।

आर्ति (दुःख) का हरणकरनेवाले महाप्रभु भगवान् श्रीरामजी यद्यपि अन्तर्यामी हैं तथापि जीवोंके किये हुए कार्योंसे वे कभी भी नहीं बंधते हैं ॥३२॥

Scanned by CamScanner

यथा बालाद्यवस्थाभिर्न जीवो दूष्यते क्वचित् ॥३३॥
तथाऽन्तश्चरमाणोऽपि न भवेद् दूषितो हरिः।

जैसे बाल्य यौवन आदि अवस्थाओंसे जीव दूषित नहीं होता है उसी प्रकार अन्तरमें रमण करनेवाले भगवान् भी जीवोंके कृत्योंसे दूषित नहीं होते हैं ॥३२॥

परव्यूहादिभेदेन विज्ञेयः स च पञ्चधा ॥ ३४ ॥

पर व्यूह विभव अन्तर्यामी और अर्चावतार भेदसे वह ईश्वर पांच प्रकारका जानना चाहिये ॥३४॥

बहुभिर्द्वारपालैश्च कोटपालैश्च संयुतः।
महामणिसमाकीर्णे मण्डपे च बिराजितः ॥ ३५ ॥

बहुतसे द्वारपाल और कोटवालोंसे युक्त तथा महामणिजडित मण्डपमें बिराजित ॥३५॥

शोभया परया युक्तः किरीटकुण्डलादिभिः।
महाराज्ञ्या च जानक्या भूलीलाभ्याञ्च सेवितः ॥ ३६ ॥
परो हि भगवान् रामः परे लोके सुशोभितः।

किरीट कुण्डलादिकों और परमशोभासे युक्त महाराणी श्रीजानकीजी तथा भूलीला देवियोंसे सेवित परलोकमें (सर्वलोकोंसे पर लोक श्रीसाकेतमें) सुशोभित भगवान् श्रीरामजी ही 'पर' ईश्वर हैं ॥३६॥

सङ्कर्षणश्च प्रद्युम्नोऽनिरुद्ध इति भेदतः ॥ ३७ ॥
विज्ञेयश्च त्रिधा व्यूहो जगत्सृष्ट्यादिकारकः।
पूर्णो ज्ञानबलाभ्याञ्च सङ्कर्षण इतिस्मृतः ॥ ३८ ॥

Scanned by CamScanner

वीर्यैश्वर्ययुतस्तत्र प्रद्युम्न इति कथ्यते।
शक्तितेजोविशिष्टस्तु ह्यनुरुद्ध इतीरितः ॥ ३९॥

सङ्कर्षण प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध इस भेदसे जगत्सृष्टिस्थित्यादि-कारक 'व्यूह' तीन प्रकारका है। ज्ञान और बलसे पूर्ण व्यूहको 'सङ्कर्षण' कहते हैं, वीर्य और ऐश्वर्यसे युक्त व्यूहको 'प्रद्युम्न' कहते हैं तथा शक्ति और तेजसे युक्त व्यूहको 'अनिरुद्ध' कहते हैं ॥३७-३८-३९॥

मत्यस्यादिर्विभवो ज्ञेयो मुख्यो गौणश्च स द्विधा।
उपास्यः पुरुषैर्मुख्यो न च गौणः कदाचन ॥ ४०॥

मत्स्यादि तत्तत्सजातीय रूपसे 'पर' ईश्वरका (भगवान श्रीराम-जीका) जो आविर्भाव (अवतार) होता है वह 'विभव' कहा जाता है। मुख्य और गौण भेदसे विभव दो प्रकारका है। मनुष्योंको मुख्यावतारकी ही उपासना करनी चाहिये। गौण अवतारकी उपासना कभी न करना चाहिये ॥४०॥

सर्वत्र सर्वदा यस्तु जीवांस्त्यक्तुं न च क्षमः।
अन्तर्यामी स विज्ञेयो जीवदोषैरदूषितः ॥ ४१॥

सर्वत्र तथा सर्वदा अर्थात् गर्भ तथा नरकादि निकृष्ट अवस्थाओंमें भी जीवोंका त्याग करनेमें असमर्थ तथा जीवदोषोंसे अदूषित 'ईश्वर' को अन्तर्यामी जानना चाहिये ॥४१॥

देशकालादिनियमै रहितश्च महाप्रभुः।
धातुपाषाणकाष्ठादिकृतविग्रहमाश्रितः ॥ ४२॥

Scanned by CamScanner

श्रीरामः स परं ब्रह्म जानकीसहितो विभुः।
अर्चावतारो विज्ञेयः कृपाशीलो गुणाम्बुधिः ॥ ४३ ॥

देशकालादिके नियमसे रहित महाप्रभु धातु पाषाण तथा काष्ठादिकोंके किये हुए विग्रह (मूर्तिरूप शरीर) का आश्रय किये हुए श्रीजानकीजीके सहित विभु कृपाशील और गुणसिन्धु परब्रह्म उन भगवान् श्रीरामजीको ही अर्चावतार जानना जाहिये ॥४२॥ ॥४३॥

एवं पञ्चप्रकारेण ह्येकोऽपि स महाप्रभुः।
विभक्तो भगवान् रामः सर्वलोकैकरक्षकः ॥ ४४ ॥

सर्वलोकोंके अद्वितीयरक्षक महाप्रभु वे भगवान् श्रीरामजी एक हैं तो भी उक्तप्रकार से पांचरूपमें विभक्त हैं ॥४४॥

सेवितः परया भक्त्या सन्तुष्टः स हरिः सदा।
स्वाश्रितेभ्यश्च दासेभ्यः सायुज्यं सम्प्रयच्छति ॥ ४५ ॥

इति तत्त्वत्रयबोधः।

परमभक्तिसे सेवित होनेपर सन्तुष्ट हुए वे भगवान् हरि (पापोंके हरण करनेवाले भगवान् श्रीरामजी) सदा स्वाश्रितदासोंको (स्वसेवकोंको) सायुज्य मुक्ति देते हैं ॥४५॥

श्रीहरिकृष्णदासेन पण्डितराजेन निर्मितम्।
भूयाच्छ्रीरामतोषाय सत्तत्त्वत्रयदर्पणम् ॥

Scanned by CamScanner

डाकोरस्थश्रीटीलाद्वारपीठसंस्थापक श्री१००८ जगद्गुरु श्रीमङ्गलदासजी महामुनीन्द्रके प्रशिष्य (नातीचेला) श्रीमहान्त श्रीरामजीदासजीमहाराज महामण्डलेश्वरविरचित

❁ तत्त्वालोक ❁

वेदान्तचिन्तामणिकी पद्यात्मक टीका

मङ्गलाचरण

नमि के गुरुपंक्तिको गौरवसे करुणाकर रामसियासे चली ।
यह श्रीमन्मङ्गलदास जगद्गुरुसे सियनाथको अर्पी भली ॥
बहु कर्कश तर्क तमोंसे विमूढ वेदान्तमतेच्छुक लोकावली ।
कहँ देइ वेदान्तकी चिन्तामणि महती निज भव्य आलोकावली ॥१॥

जीवतत्त्व

वर शेष शरीर सियावर को अरु चेतन अंश न प्राण न ज्ञाना ।
जड़ता विन इन्द्रिय देह नहीं करनी करि भोगत भोगहु नाना ॥
प्रति देह में देही विभिन्न सदा रघुनाथ अधीन अणु परिमाना ।
सुख ज्ञान स्वरूप विकारविना इमि ज्ञानिन जीवस्वरूप वखाना ॥२॥
नहि एक परस्पर भिन्न प्रभु धनुधारी से भिन्न सबै तनुधारी ।
दुइ भाँति के जीवन में कछु बद्ध विमुक्त कछु सबलोकविहारी ॥
बहु जन्म के कर्म के बन्ध बँधे मरि जन्मत बद्ध भवाब्धि मझारी ।
पुनि मुक्त अनन्त गुणाम्बुधि रामहिं सेइ तरे भवसागर भारी ॥३॥

Scanned by CamScanner

श्रीहनुमते नमः ।

डाकोरस्थ श्रीटीलाद्वारपीठसंस्थापक श्री १००८ जगद्गुरु

श्रीमङ्गलाचार्यमहामुनीन्द्रनिर्मितं

* श्रीप्रभञ्जनकुमाराष्टकम् *

यश्चण्डदीधितिसहस्रसुकर्कमर्कं सन्तर्क्य दिव्यतरुमिष्टफलं मनस्वी
जग्राह जन्मसमये कृपया मुमोच स श्रीप्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात् ॥१

यस्याप्रमेयबलबुद्धिनिधेः प्रसादादासाद्य सख्यमरिदर्पहरः कपीन्द्रः ।
सायुज्यमाप यशसा सह राघवस्य स श्रीप्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात् ॥२

येनेत्यभाणि खलुदम्भविजृम्भमाणंकुम्भंचमेघमहमादिशनाय सीताम्
तूर्णं विचूर्ण्य दशमौलिमिहानयामि स श्रीप्रभञ्जननुर्जनतां समव्यात् ।३

मेरुः किमेष? नहि पक्षभृदस्ति सोऽपि सूर्यो न तस्य गमनं दिशि
दक्षिणस्याम्

तिर्यग्गतिर्न तु शिखी च य इत्यतर्कि स श्रीप्रभुञ्जनजनुर्जनतां समव्यात्

ज्ञात्वाप्यहो सपदि मित्रजितं बलेन सौमित्रिरप्रतिभटं समरेषु घोरम्
मित्रं चकार यममित्रजयाय धीमान् स श्रीप्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात्

रे वानराऽयि विमते!नहि हैहयोस्मि मन्दोऽस्मि भो स तु गिरिर्न नु रामदूतम्
नोवेत्सि मामितिवचो य उवाच चित्रं स श्रीप्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात्॥

हस्तै र्निजैरपि शिरांसि निकृत्य योसावुद्धृत्य शङ्करनगं न च मोहमाप
मुष्टया मुमूर्छ स तु यस्य शशंस वीर्यं स श्रीप्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात्

यश्चाश्रयोहि सुधियां निधिरार्जवस्य संसारिणां करुणयाऽखिलदुःखहारी
यस्मै ददौ जनकजा शुभराममन्त्रं स श्री प्रभञ्जनजनुर्जनतां समव्यात् ॥८

सदाचार्यसुरेन्द्रश्रीमङ्गलाचार्यनिर्मितम् ।
प्राभञ्जनाष्टकं भूयात् प्राभञ्जनस्य तुष्टये ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner